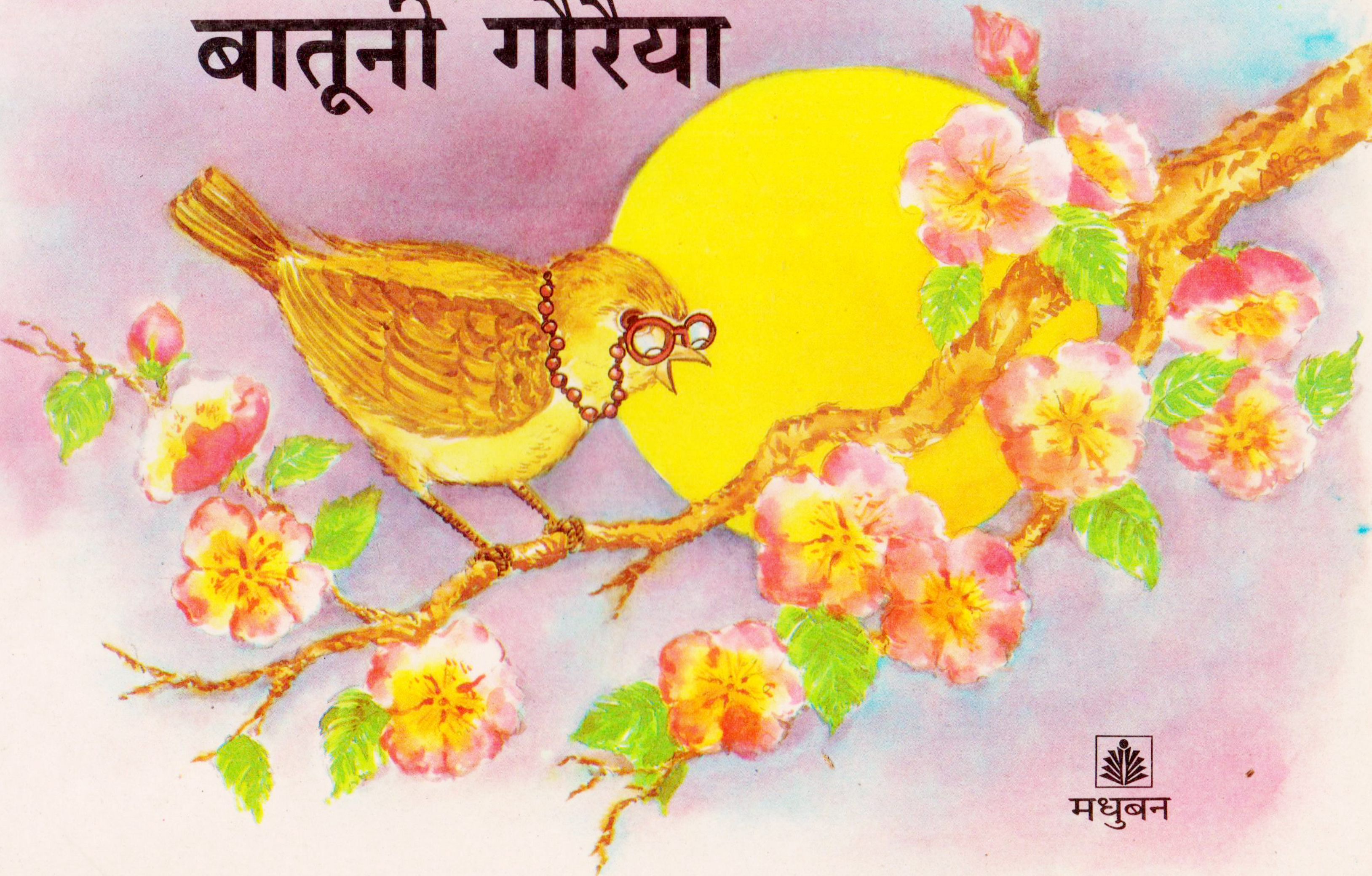
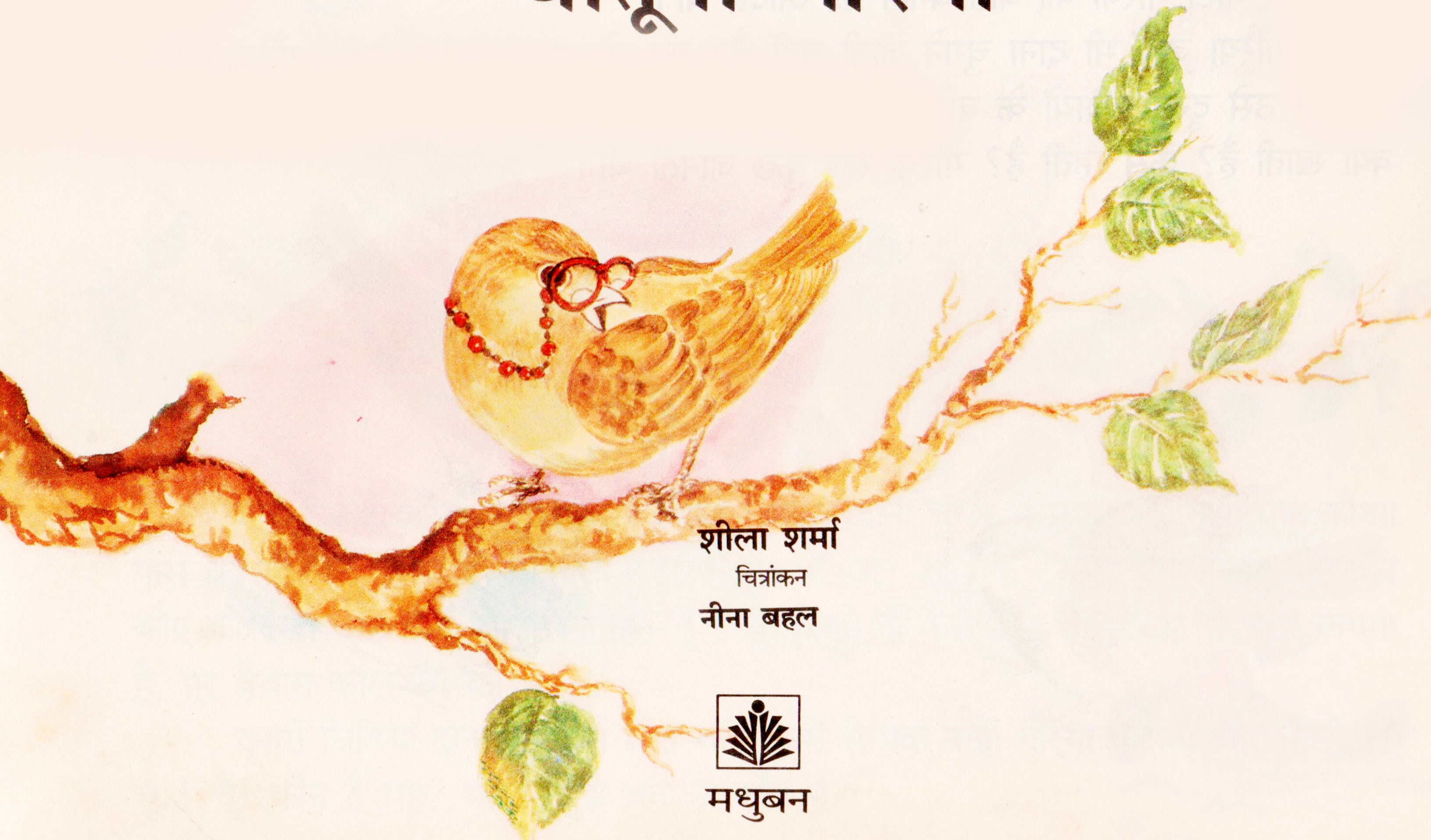
बाल कथा-2

बातूनी गौरैया



मधुबन

बातूनी गौरैया



शीला शर्मा

चित्रांकन

नीना बहल

मधुबन

एक गौरैया थी। वह बूढ़ी थी, इसलिए फुदक नहीं पाती थी, कुछ मोटी भी हो गई थी। उस बूढ़ी और मोटी गौरैया को बातें बनाने की आदत थी।

गौरैया जहाँ भी दाना चुगने जाती वहीं बैठ कर बोलना शुरू कर देती। गौरैया बातूनी थी, पर उसे दूसरे पक्षियों के बारे में बहुत सारी बातें मालूम थीं।कौन सी चिड़िया कैसी है? क्या खाती है? कैसे रहती है? गौरैया सब कुछ जानती थी।





एक दिन बड़े सबेरे की बात है। सब चिड़ियाँ दाना चुगने में मगन थीं, तभी एक कौआ पास के पेड़ की डाल पर आ बैठा। उसके मुँह में रोटी का एक टुकड़ा था। मोटी गौरैया ने कौए को देखा और लगी बातें बनाने—चूँ ! चूँ! देखो तो कैसे बैठा है। देखने में चतुर लगता है, पर बेचारा काले रंग का है।

दूसरी चिड़ियाँ दाना चुगने में मस्त थीं। उनमें से एक नन्ही गौरैया फुदकी और बोली—चूँ ! चूँ! कौन है यह? मौसी, मुझे बताओ,कौन है?

बूढ़ी, बातूनी गौरैया ने सिर को एक झटका दिया और बोली—अरे, कौआ है और कौन! जब तक चोंच में रोटी है तभी तक मुँह बन्द है। जहाँ मुँह खुला वहीं अपनी काँव-काँव-काँव का राग शुरु कर देता है—

देखो काला-काला कौआ
काँव-काँव है करता रहता,
हम चिड़ियों को बड़ा सताता-
अंडे-बच्चे सब खा जाता,
सड़ा-गला जो भी पा जाता
उससे अपनी भूख मिटाता।





पास की चिड़ियाँ दाना चुगने में व्यस्त थीं। उनमें से एक ने चुगते-चुगते कह दिया—चूँ! चूँ! अच्छा, ऐसी बात है?

यह सुनकर बड़बोली गौरैया ने फिर अपनी जीभ चलानी शुरू कर दी—कौए की तरह के और भी कई पक्षी हैं, जो सड़ा-गला खाते हैं। क्या नाम है? हाँ, याद आया - गिद्ध। ये तो चुपचाप अपनी जमात अलग बनाकर बैठे रहते हैं। जहाँ एक गिद्ध बैठा हो, वहीं सारा कुटुम्ब पहुँच जाता है, परन्तु कोई आवाज़ नहीं करता। भारी-भरकम शरीर वाला गिद्ध, मरे हुए पशुओं को खाने वाला पक्षी है। इसकी चोंच देखी है तुमने?



फुदकती हुई एक गौरैया बोली—हाय! मुझे तो डर लगता है, अन्दर की ओर मुड़ी चोंच वाले गिद्ध को देखकर।

इतने में इन चिड़ियों पर दो बड़े, फैले हुए पंखों की परछाईं पड़ी और सब की सब चिड़ियाँ झट से उड़कर, एक पेड़ की डाल पर सहमी-सहमी बैठ गईं।

परछाईं के जाते ही सब चिड़ियाँ एक साथ चूँ ! चूँ ! करके शोर मचाने लगीं। न जाने कौन सी चिड़िया किससे क्या कह रही थी—

चूँ ! चूँ ! मेरा तो जी घबरा रहा है। क्या था?
चूँ ! चूँ ! मैं तो डर से मर गई आज।
चूँ ! चूँ ! हाय, कितनी बड़ी परछाईं थी।
चूँ ! चूँ ! हाय राम, क्या था?
चूँ ! चूँ ! चलो, मोटी गौरैया से पूछते हैं।



मोटी गौरैया सबकी बातें सुन रही थी। वह बोली—चील थी चील, और क्या? आज हम सब बच गईं।

चूँ ! चूँ ! चील!

चूँ ! चूँ ! हाँ, चील। जानती नहीं ये चीलें तो बड़े-बड़ों को उठाकर ले जाती हैं — चूहे, छिपकली, खरगोश, साँप, गिलहरी। अरे, पूछो मत। आकाश में उड़ते हुए भी इनकी नज़र ज़मीन के शिकार पर लगी रहती है। ऊपर से ऐसा झपट्टा मारती हैं कि कब आईं और कब गईं, किसी को पता नहीं चलता।





मोटी गौरैया बोलती जा रही थी—चीलें पेड़ की ऊँची डाल पर घोंसले बनाती हैं। इन चीलों के पंख बहुत मज़बूत और बड़े होते हैं, तभी तो ऐसे शिकारी कारनामे कर पाती हैं। इनकी चोंच और पंजे कुछ-कुछ गिद्ध से मिलते-जुलते हैं। जो एक बार इनके पंजों की पकड़ में आ जाए, वह छूट नहीं सकता।

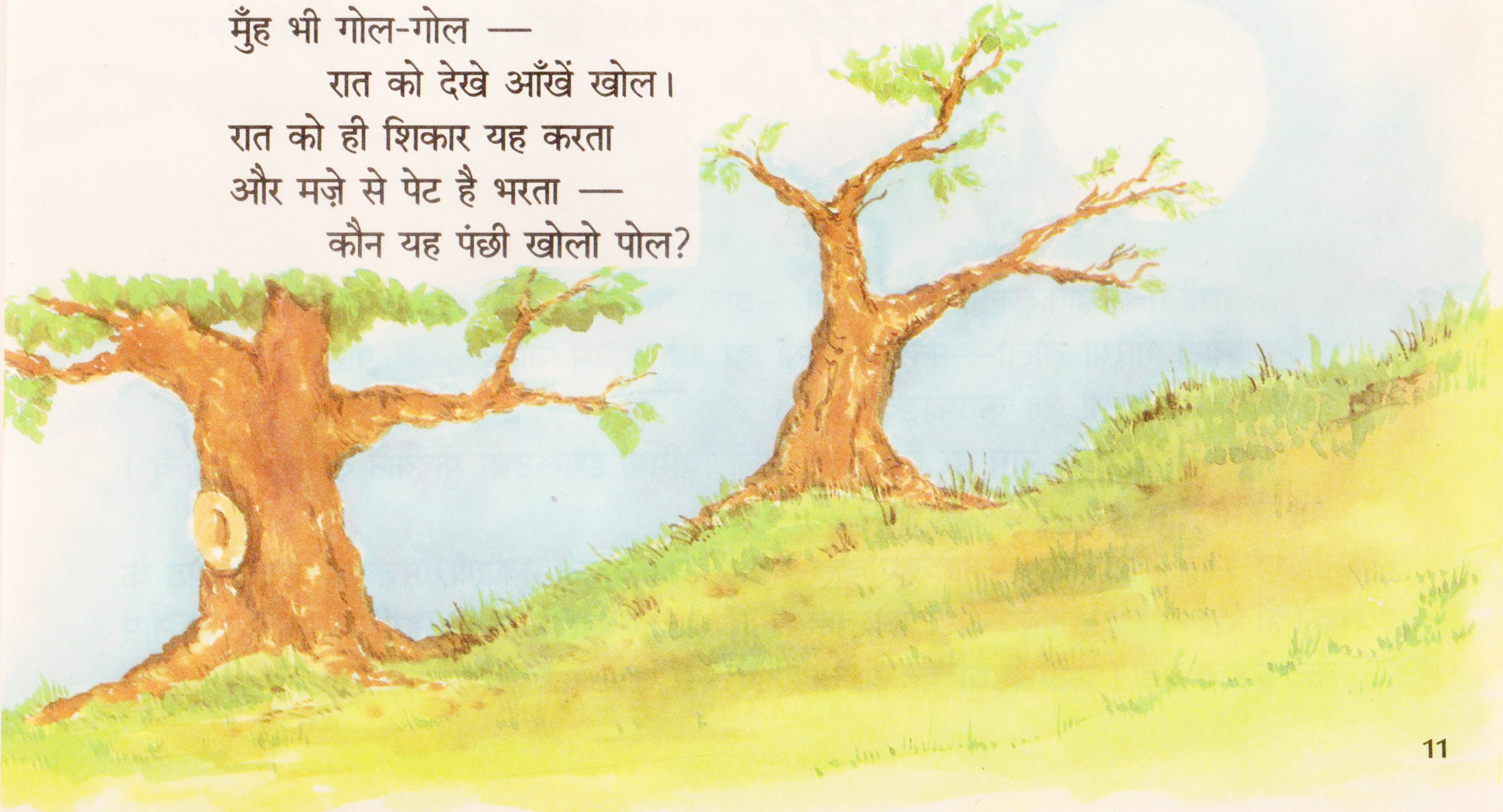
दूसरी गौरैया बोली—तुम्हें क्या? तुम तो सदा दूसरों में बुराई ही देखती रहती हो। क्या हम भी अपने बच्चों को छोटे-छोटे कीड़े खिलाकर फ़सल को नुकसान होने से नहीं बचातीं? उसी तरह चील, गिद्ध, कौवे अगर ज़मीन की सड़ी-गली चीजें, मरे हुए जानवर और कीड़े-मकोड़े न खायें तो तुम बदबू के मारे कहीं रह न पाओगी।

यह सुनकर मोटी गौरैया का मुँह गुस्से से लाल हो गया। तभी नन्ही गौरैया उसके पास आई और शान्त कराती हुई बोली—मौसी, हमें उस पक्षी के बारे में बताओ जिसकी आँखें पेड़ के खोखले में से रात के समय गोल-गोल चमकती हैं।



बातूनी गौरैया को बोलने का अच्छा मौका मिला। अपना गुस्सा भूल कर झट नन्ही को समझाने लगी—

गोल-गोल आँखें
मुँह भी गोल-गोल —
रात को देखे आँखें खोल।
रात को ही शिकार यह करता
और मज़े से पेट है भरता —
कौन यह पंछी खोलो पोल?





तभी सचेत होकर नन्ही गौरैया बोली—अरे! यह टुक-टुक की आवाज़ कहाँ से आ रही है?

मोटी गौरैया बोली—नन्ही, तू क्यों डर रही है, मैं जो हूँ न तेरे पास। टुक-टुक की आवाज़ करने वाला वह कठफोड़वा होगा।

कठफोड़वा के नाम पर हँसती हुई नन्ही चिड़िया इधर-उधर फुदकने लगी—चूँ ! चूँ ! यह कैसा नाम है ?

मोटी गौरैया ने समझाते हुए कहा—अरे, यह अपनी नुकीली, मज़बूत चोंच से पेड़ के तने में छेद कर अंदर के कीड़ों को बाहर निकाल कर खा जाता है। इसी कारण इसका नाम कठफोड़वा पड़ा। कठफोड़वा यह यों कहलाए — काठ को फोड़े, कीड़े खाए?

तभी एक साँवली, सलोनी चिड़िया पेड़ की डाल पर आ बैठी। गौरैया बोली—लो, नन्ही, इसे भी पहचान लो। यह है कोयल। जब आम के वृक्ष में बौर फूलता है उस समय इसकी सुरीली कुहू-कुहू सबका मन जीत लेती है। और यह चतुर भी बहुत है। अपने अंडे कौए के घोंसले में चुपके से रख देती है और बेचारा कौआ उन्हें अपना समझ सेता रहता है।



एक दूसरी गौरैया बोली—अरे! हम-तुम उतनी चतुर नहीं तो क्या हुआ। हम क्या किसी से कम होशियार हैं? अपना घोंसला इधर उधर से तिनके बटोर कर बनाती हैं। हम मेहनत से नहीं घबरातीं। अपने घोंसलों को भी कितना साफ़ रखती हैं।



मोटी गौरैया बोली—हाँ, सो तो है, पर अपने परिवार की बया चिड़िया का घोंसला तो सच में अनोखा है। वह देख नन्ही, दूर उल्टा लटकता हुआ वह घोंसला बया का ही तो है। कितनी कुशलता से बना हुआ है। और कुशलता देखनी हो तो तुझे दरजिन चाची के पास ले चलूँगी। वह भी नुकीली चोंच से पत्तियों को सिल कर कमाल का घोंसला बनाती हैं।… तभी पास के पेड़ से गुटर गूँ! गुटर गूँ! आवाज़ आने लगी। नन्ही बोली — ये कौन हैं मौसी?

मोटी गौरैया ने कहा—अरे ये कबूतर हैं। कहीं कोई मन्दिर, घर, रेलवे-स्टेशन न होगा जिनकी छतों पर इनका घोंसला न बना हो। किसी भी ऊँचाई पर पहुँच जाओ, कोई चिड़िया मिले या न मिले, झुंडों में उड़ते कबूतर अवश्य दिखाई देंगें। और हाँ, कहते हैं कि कबूतर पहले डाकिए का काम भी करते थे। सामने के मन्दिर के पुजारी की बेटी अक्सर गाती है—

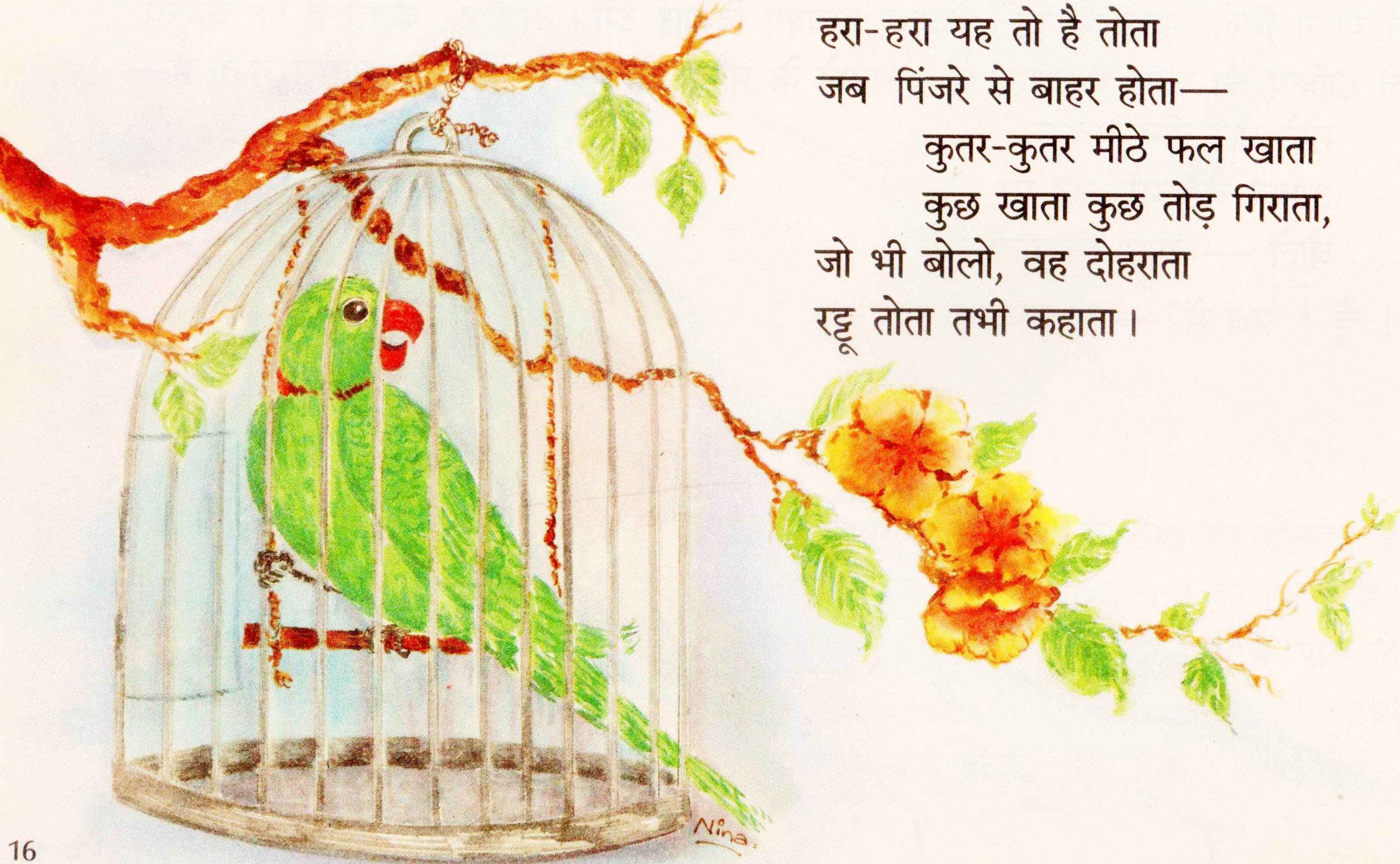
मोटे-मोटे तीन कबूतर
आकर बैठें मेरी छत पर,
बोलें — गुटर गूँ! गुटर गूँ!

चूँ ! चूँ ! सच में?—नन्ही चहकी।



तभी पेड़ में लटकते पिंजरे को देख कर नन्ही ने पूछा—मौसी, यह पिंजरे में कौन है? मोटी गौरैया बोली—

हरा-हरा यह तो है तोता
जब पिंजरे से बाहर होता—
कुतर-कुतर मीठे फल खाता
कुछ खाता कुछ तोड़ गिराता,
जो भी बोलो, वह दोहराता
रट्टू तोता तभी कहाता।





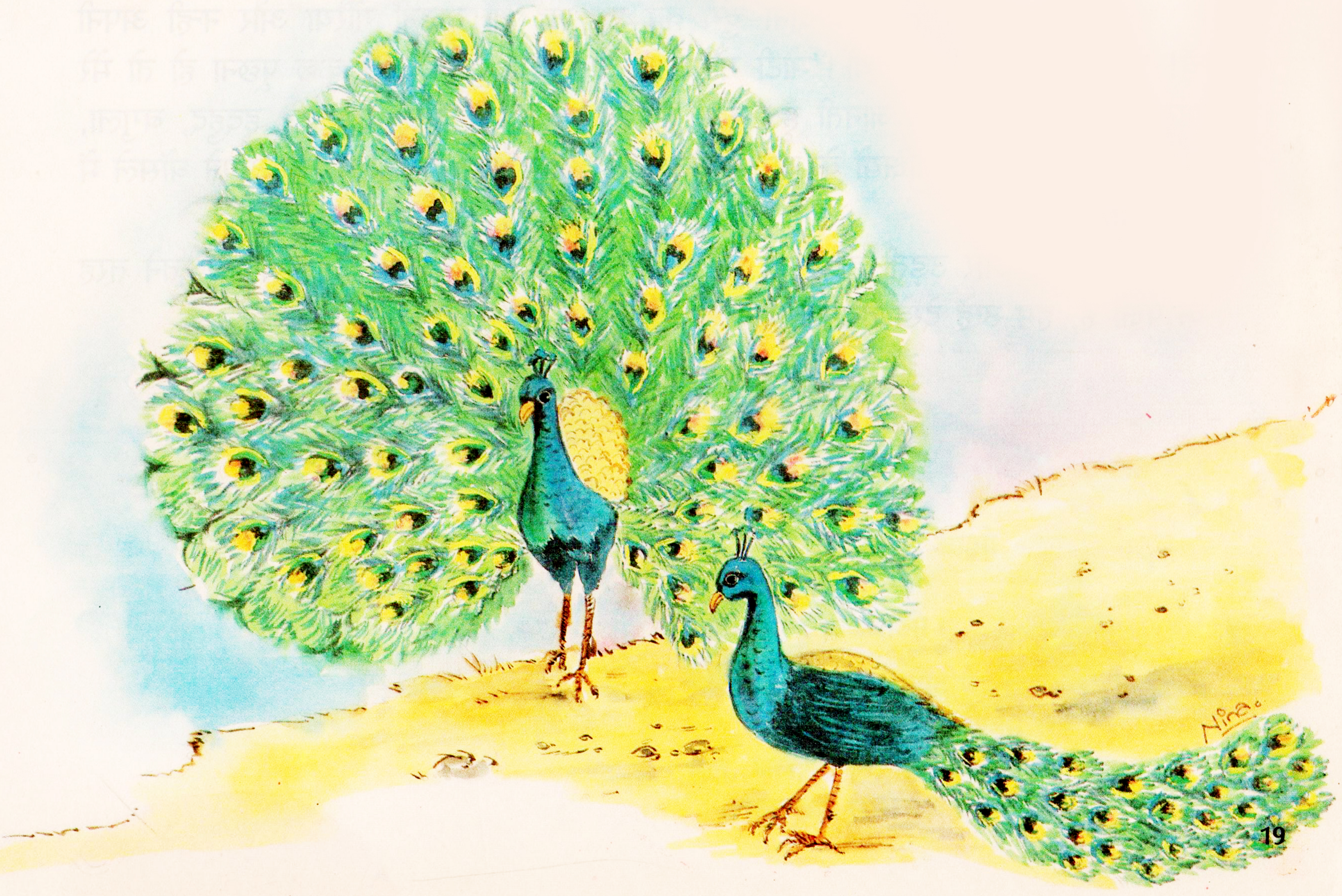
बातूनी गौरैया बिना थके कहती जा रही थी—तोते के नाम से मुझे मैना याद आ गई। हमारे और कौए की तरह यह भी आदमी के साथ-साथ रहने वाला पक्षी है। आँख के चारों तरफ सुन्दर पीला या नारंगी रंग देखकर तो तू इसे दूर से पहचान सकती है। यह अनाज, कीड़े-मकोड़े आदि खाती है। खेतों में हल के पीछे-पीछे चलती रहती है, जिससे ज़मीन से निकलने वाले कीड़ों को खा सके।

मोटी गौरैया बोली— अरे सुनो, मैंने तुमको अपने राजा मोर की बात तो बताई ही नहीं। सब से सुन्दर पंछी है यह। जब बादल गरजते हैं तो सारे पंख फैलाकर अपने पीछे एक चक्र-सा बना लेता है। क्या-क्या रंग हैं इसके पंखों में! इसके पंख इतने सुन्दर हैं कि भगवान कृष्ण भी अपने मुकुट में मोरपंख लगाते थे। जानती हो मोर खाते क्या हैं?

नहीं मौसी, मैं क्या जानूँ?

बातूनी गौरैया ने बताया—मोर कीड़े-मकोड़े तो खाते ही हैं ताकि धरती साफ़ रहे , ये अनाज और पौधों की टहनियाँ भी खाते हैं। कहीं साँप देख लें तो दूर से ही शोर मचाते हुए उसको मारकर खाने के लिए भागते हैं। जानती हो, मोर भारत देश का राष्ट्रीय पक्षी भी है।




Nina.

तब तक और चिड़ियाँ दाना चुग कर उड़ गई थीं। बातूनी गौरैया और नन्ही अपनी चूँ! चूँ ! में ही लगी हुई थीं। मोटी गौरैया बोली—देख नन्ही, जब कुछ पूछना हो तो मेरे पास आ जाना। मैं सब जानती हूँ। कल तुझे बुलबुल, नीलकंठ, टिटिहरी, हुदहुद, बगुला, सारस और कई अन्य पक्षियों के बारे में बताऊँगी। अब साँझ हो रही है, जा अपने घोंसले में चली जा।

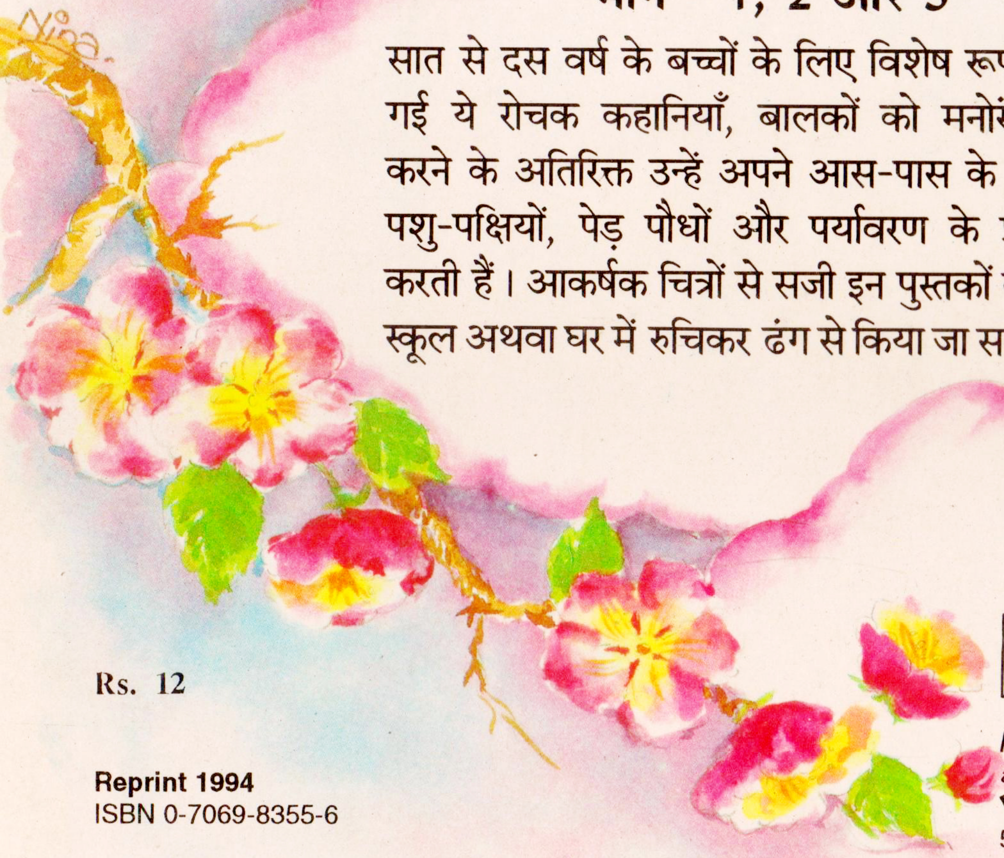
घर की ओर उड़ती हुई नन्ही गौरैया सोच रही थी ---- हमारे आस-पास कितने तरह के पक्षी हैं, हम उन्हें देखें तब तो जानें!





धरती माँ की सरित गोद में
हम सब मिल-जुल खेलें, आओ
हरे-भरे वन वृक्ष मनोहर
पशु व पक्षी, इन्हें बचाओ।

धरती माँ की हरित गोद में,
आओ खेलें मिल-जुल हम सब
जल, थल, गगन, पशु और पक्षी
रक्षा करें सभी की हम सब।।



बाल कथा

भाग - 1, 2 और 3

सात से दस वर्ष के बच्चों के लिए विशेष रूप से लिखी गई ये रोचक कहानियाँ, बालकों को मनोरंजन प्रदान करने के अतिरिक्त उन्हें अपने आस-पास के वातावरण, पशु-पक्षियों, पेड़ पौधों और पर्यावरण के प्रति सजग करती हैं। आकर्षक चित्रों से सजी इन पुस्तकों का उपयोग स्कूल अथवा घर में रुचिकर ढंग से किया जा सकता है।

Rs. 12

Reprint 1994
ISBN 0-7069-8355-6

MADHUBAN EDUCATIONAL BOOKS
a division of
VIKAS PUBLISHING HOUSE PVT LTD
576, Masjid Road, Jangpura, New Delhi-110 014